हिमाचल प्रदेश में ईसाई मिशनरियों द्वारा मत परिवर्तन: एक सामाजिक समस्या

Sumit Kumar[1], Dr. Thutkan negi[2]
[1]*Research Scholar, Department of History, Central University of Himachal Pradesh, Sapat Sindhu Parisar-I Dehra, Distt Kangra, Himachal Pradesh*
[2]*Assistant Professor, Department of History, Central University of Himachal Pradesh, Sapat Sindhu Parisar-I Dehra, Distt Kangra, Himachal Pradesh*

***शोध सार*—भारत एक ऐसा देश है जहाँ सनातन धर्म, अनेक मत, पंथ और समुदाय की संस्कृतियाँ और परंपराएँ एक साथ फलती-फूलती हैं। हमारे संविधान ने हर व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करने और उसे प्रचारित करने की आज़ादी दी है। लेकिन जब यह स्वतंत्रता किसी के आर्थिक लालच, सामाजिक दबाव या बाहरी प्रभाव के कारण बदल जाती है, तब यह समाज में असंतुलन पैदा करती है। कई जगहों पर ईसाई मिशनरियाँ सामाजिक भेदभाव, शिक्षा, स्वास्थ्य और सहायता के नाम पर मत परिवर्तन को बढ़ावा देती दिखाई देती हैं। जिसके साथ हिन्दू देवी देवताओं को शैतान कहकर ख़ारिज करती है। इससे समाज में अविश्वास, सांस्कृतिक टूटन और पारंपरिक मूल्यों में कमी देखी जा रही है। जिसके कारण सामाजिक एकता समाप्ति की ओर अग्रसर हो रही है। यह शोध इस बात को समझने की कोशिश करता है कि कैसे ईसाई मिशनरियों ने हिन्दू समुदाय के लोगों को ईसाई मत परिवर्तन किया। जिसे कारण यह केवल धार्मिक नहीं, अपितु एक सामाजिक समस्या भी बन गई है।**

***मुख्य बिंदु*—ईसाई मिशनरी, मत परिवर्तन, हिमाचल प्रदेश, सामाजिक समस्या**

I. प्रस्तावना

भारत विश्व ही प्रचीनतम सभ्यताओं में से एक है। जहां सनातन धर्म एवं विविध मत, पंथ, समुदायों के साथ अनेक प्रकार की बोलियों, भाषाओं एवं सांस्कृतिक के लोग रहते है। इस बहुल समाज में सनातन धर्म एवं अनेक प्रकार के, मत, पंथ, एवं समुदाय को मानने वाले लोग रहते है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसमे कई मतों का प्रचार प्रसार करने के लिए विदेशी भूमि से लोग आये, जिसमें ईसाई मत भी एक है। ईसाई परंपराओं के अनुसार ईसा मसीह के शिष्य एवं प्रेरितों ने विभिन्न स्थानों पर ईसाई मत का प्रचार-प्रसार किया उनमें भारत भूमि भी था। भारत में 52 ईसवी के लगभग सेंट थॉमस जो ईसा मसीह का प्रेरित था, उसने क्रैंगनोर के पास मुजरिस जो मालाबार तट का महत्वपूर्ण समुद्री बंदरगाह थी। (Thurston, 1909) इसके पश्चात धीरे-धीरे यह क्रम चलता रहा। चेरामन पेरुमल के शासन काल में भी ईसाइयों के आप्रवास के प्रमाण मिलते है। मध्यकालीन यात्री मार्कोपोलो सहित अन्य यात्रियों ने भी मालाबार तट पर ईसाई लोगों द्वारा खुद को अच्छे व्यापारियों, सैनिक, एवं प्रशासनिक कार्य में स्थापित किया बताया। भारत में सीरियाई चर्च के साथ रोमन कैथोलिक का भी प्रभाव पड़ा। वास्को डी गामा आगमन भी ईसाई मत के प्रचार प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। (Richter, 1908) पुर्तगालियों ने भारत में ईसाई मत को बढ़ाने के लिये अपने सैनिकों, नाविकों और देशी महिलाओं के बीच अंतर्विवाह को प्रोत्साहित किया, बिना पूछे उनसे उत्पन्न संतानों को बपतिस्मा दिया और मूल निवासियों को ईसा बनाने के हर संभव प्रयास किये। (Moraes,1964). फ्रांसिस ज़ेवियर गोवा पहुँचने वाले पहले जेसुइट मिशनरी थे। उनके आगमन से ईसाई मत का प्रचार और ईसाई मत में परिवर्तन करने वाले की संख्या में वृद्धि हुई। ज़ेवियर ने सबसे पहले मत्स्य एवं दलित वर्ग के बीच ईसाई मत का प्रचार किया। भारत में ईसाई मत के प्रचार को एक दिशा देने का कार्य ज़ेवियर द्वारा किया गया। (Richter, 1908) सबसे पहले जेसुईट ने ही भारत में प्रिंटिंग प्रेस को स्थापित किया। अठारहवीं शताब्दी में यूरोप में प्रोटेस्टेंट राज्यों के औपनिवेशिक शक्तियों के रुप में उभरने से रोमन कैथोलिक को धक्का लगा। जिसके कारण अब भारत में प्रोटेस्टेंट शाखा ने अपनी मान्यताओं के अनुसार ईसा मत को फैलाने में दिलचस्पी दिखाई। जिसमें दो प्रोटेस्टेंट मिशनरियों बार्थोलोम्यू जिगेनबाल्ग और हेनरी शाउ थे। उन्होंने ट्रैक्यूबार को अपना मिशन स्थल बनाया। ईसाई मत का उत्तर भारत में प्रचार गोवा के मिशनरियों के द्वारा मुग़ल काल में फैला। अकबर के दरबार में तीन मिशन आये। अकबर ने ईसाइयों के साथ विनम्रतापूर्वक और उदारता का व्यवहार अपनाया। अकबर ने उन्हें चर्च बनाने और ईसाई मत के प्रचार की अनुमति प्रदान की। (Du Jarric, 1996) इसके पश्चात विलियम कैरी और उनके सहयोगियों जॉन मार्शल एवं विलियम वॉर्ड ने भारत में आधुनिक मिशन कार्य शुरू किया। इन्होंने सेरामपुर कॉलेज की शिक्षा के उद्देश्य से स्थापना की। (Richter, 1908) 1813 और 1833 के बीच में ब्रिटिश संसद द्वारा पारित चार्टर अधिनियम ने ईसाई मिशनरियों के प्रवेश द्वार को पूरी तरह खोल दिया। उत्तर भारत में ईसाई मत का बहुत बड़ा योगदान डेविड ब्राउन, हेनरी मार्टिन और क्लॉडियस बुकानन जैसे पादरी को जाता है।बिशप मिडलट, कलकत्ताके पहले बिशप, ने युवा भारतीय ईसाइयों को शिक्षित करने के लिए एक सुंदर मिशनरी कॉलेज (बिशप कॉलेज की स्थापना) की एवं उसके उत्कृष्ट मॉडल की कल्पना की। हालाँकि वह मिशन के महान मित्र नहीं थे। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्रचारकों, कैटेचिस्टों, स्कूल शिक्षकों और भारतीयों को देना। यह स्थानीय भाषा में बाइबिल का अनुवाद करने का मुख्यालय भी था। डॉ. अलेक्ज़ेंडर ने भारत में मिशनरी कार्य का दूसरा दौर शुरू किया, जो सबसे अधिक प्रभावी था। उन्होंने शिक्षा को इंजीलवादी संस्था मिशन कार्य को नया रुप दिया। अलेक्ज़ेंडर ने राजा राम मोहन राय की मदद से एक स्कूल खोला, जो बाद में स्कॉटिश चर्च कॉलेज बन गया। इसके उपरांत अन्य प्रांतों में भी स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना पर विशेष ज़ोर दिया। लॉर्ड मैकॉले की स्कूलों और कॉलेजों में अंग्रेज़ी भाषा के प्रयोग से मिशनरियों को लाभ प्राप्त हुआ। उसके पश्चिम देशों से ईसाई मिशनरियों के आगमन में वृद्धि हो गई, जिसमें अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड एवं यूरोप से मिशनरियों के सैलाब भारत में आए। (Bhattacharyya, 1956) विलियम टेलर, जेएम थोबर्न और डॉ क्लारा स्वैन पहली महिला चिकित्सक मिशनरी थे। अमेरिकी प्रेस्बिटेरियन मिशन के रेव जॉन न्यूटन (न्यूटोर) या जॉन सी. लोवी 1835 मेंलुधियाना (पंजाब) पहुंचे और उत्तर-भारत में मिशन स्टेशनों का एक नेटवर्क बनाया। स्वतंत्रता के पश्चात से वर्तमान तक विदेशी मिशनरी एवं भारत मिशनरी अपनी गतिविधियाँ के माध्यम से ईसाई मत का प्रचार प्रसार करते हैं। ईसाई मिशनरियों ने भारत के प्रत्येक प्रांत में ईसाई मत के प्रचार करने का कार्य किया। जिससे हिमाचल प्रदेश भी अछूता नहीं रहा।परतंत्रता के काल में जब हिमाचल प्रदेश का गठन नहीं हुआ था तब से मिशनरियों का आगमन एवं उनकी गतिविधियाँ चल रही है। ईसाई मिशनरियों ने वर्तमान हिमाचल प्रदेश के कोटगढ में सबसे पहले हिमालय मिशन स्टेशन की स्थापना की। उसके पश्चात शिमला, काँगड़ा, मोरावियन मिशनरियों ने जनजातियाँ क्षेत्र लाहौल, किन्नौर में मिशन स्टेशन एवं आनी, चम्बा और सिरमौर में शुरुआती दौर में मिशनरी स्टेशन स्थापित किये गये। स्थानीय लोगों से संबंध

स्थापित करने के लिए अपनी गतिविधियों का संचालन किया। जिसमें स्थानीय भाषा सिखना स्थानीय भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद कर अपने मत का प्रचार प्रसार करना, स्कूलों, हॉस्पिटल, एवं डिस्पेंसरियों की स्थापना की। आर्थिक रुप से कमजोर लोगों के सहायता प्रदान करना।आनी क्षेत्र में मिशनरी मार्कस कार्लटन उनकी पत्नी के साथ ईसाई मत में मत परिवर्तित पंजाबी पुरुष भा उनके साथ आए थे, जिन्होंने पहाड़ी लड़कियों से शादी की और मिशन द्वारा उनके लिए ख़रीदी ज़मीन पर खुद को किसान के रुप में स्थापित किया।(Chetwode, 1972) ईसाई मिशनरी जिस भी क्षेत्र में पहुँची, उस क्षेत्र के अनुरूप अपनी गतिविधियाँ संचालित की। जिसके कारण स्थानीय लोगों पर इसका प्रभाव बढ़ता गया। ईसाई मिशनरियों ने लोगों के मत परिवर्तन करवाने के लिए कई कारणों वह प्रेरणाओं का सहारा लिया। जिसमें लोगों की आर्थिक रुप से सहायता करने लिए उनका स्वास्थ्य ठीक करने लिए हॉस्पिटल का शुल्क एवं लोगों को हिन्दू समाज की सामाजिक भेदभाव के कारण मंदिरों में प्रवेश नहीं मिलता जबकि चर्च में सभी समान है। मत परिवर्तन के लिए हिन्दूओं के देवी देवताओं को शैतान कहकर उनका खण्डन कर लोगों का मानसिक रुप से अपने पारंपरिक विश्वास मूल्यों को त्यागने के लिए प्रेरित किया। ईसाई मिशनरियों के द्वारा यह मत परिवर्तन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप में किया जाता है। मत परिवर्तन के कारण सामाजिक एकता को हानि पहुँच रही जिसके कारण लोगों में आपसी वैमनस्य का भाव उग्र हो रहा है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य "हिमाचल प्रदेश में ईसाई मिशनरियों द्वा मत परिवर्तन: एक सामाजिक समस्या" है। शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्तोत्र का उपयोग किया गया है जिसमें प्राथमिक आँकड़े साक्षात्कार के माध्यम से मत परिवर्तन लोगों एवं उनके आस पास के परिवारों से एवं अख़बारों से प्राप्त जानकारी है कि मत परिवर्तन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा। द्वितीय स्तोत्र में सरकारी गेजेटियर, पुस्तकों एवं शोध पत्रों का उपयोग किया गया है। इस शोध पत्र का महत्व इस विषय की गम्भीरता से दर्शता है कि जिन लोगों को अभी तक ज्ञात नहीं मत परिवर्तन किस प्रकार से समाज की एकता के लिए उभरती हुई चुनौती है जिस समस्या को शीघ्र समाधान नहीं किया गया। तो यह भविष्य में विकराल रुप धारण कर विविधता में एकता की परिभाषा को पूरी तरह खण्डित कर देगी।

II. हिमाचल प्रदेश में ईसाई मिशनरियों का आगमन

मिशनरियों ने कोटगढ़, शिमला, कांगड़ा, चंबा, लाहौल और पू के विभिन्नक्षेत्रों में मिशन स्टेशन स्थापित किए, जो कि पूर्व शिमला और पंजाब हिल स्टेट्स केअंतर्गत आते थे, जिन्हें अब हिमाचल प्रदेश में शामिल कर लिया गया है।शिमला और पंजाब हिल स्टेट्स में ईसाई मिशनरी प्रयासों को मिशन स्टेशन केअनुसार निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. कोटगढ़ में हिमालय मिशन स्टेशन (1843), शिमला में हिमालय मिशन स्टेशन (1845), शिमला बैपटिस्ट मिशन (1865)
2. कांगड़ा में चर्च मिशनरी सोडेटी मिशन स्टेशन (1854), और कांगड़ा में चर्च ऑफकनाडा (एम.एस.सी.सी.) मिशन स्टेशन (1912)
3. लाहौल (1854), किन्नौर (पू. 1865), और शिमला (1900) में मोरावियन मिशन।
4. आनी, चंबा (1863) और सिरमौर (1895) में मिशन स्टेशन।

1. कोटगढ में हिमालय मिशन

कोटगढ़ मिशन, पंजाब में चर्च मिशनरी सोसाइटीका सबसे पुराना मिशन, 1843 में यहाँ स्थापित किया गया था। रेव. जे.डी. प्रोचनो और ए. रूडोल्फ ने 1843 में कोटगढ़ में मिशन की शुरुआत की। (Church Missionary Society, 1852)

जुलाई 1844 में, कलकत्ता के बिशप और उनके पादरी, रेव. जे. एच. प्रैट ने मिशन कादौरा किया, जिसके दौरान रेव. जे. डी. प्रोचनो को पुजारी के रूप में नियुक्त कियागया। (Church Missionary Society, 1891) रेव. जे. एच. प्रैट ने अपनी यात्रा केदौरान रेव. प्रोचनो के साथ मिलकर इस क्षेत्र का दौरा किया, ताकि वे इस क्षेत्र औरइसके निवासियों से परिचित हो सकें, साथ ही पहाड़ों और घाटियों के किनारे बसे कई गांवों के निवासियों को 1842 में स्थापित गोर्टन मिशन स्कूल कोटगढ़ के बारे मेंजानकारी दे सकें। रेव. जे.डी. प्रोचनो ने 1845 में व्यापक भ्रमण किए और ईसाईसामग्री का प्रसार किया। किन्नौर, एक आदिवासी क्षेत्र में, प्रोचनो ने मध्य एशिया सेकई खानाबदोश तातार देखे जो तिब्बती ट्रैक्ट को समझने में सक्षम थे। रेव.जे.डी. प्रोचनो ने कहा कि "इस मौसम में हमारे एकांत में कई आगंतुक आए; उनमें से, प्रशियाके महामहिम राजकुमार वेडरमार, जो तिब्बत की सीमाओं से आए थे, ने यहां शनिवारऔर प्रभु का दिन बिताया, स्कूल का दौरा किया और दिव्य सेवा में भाग लिया।"(Church Missionary Society, 1891)

शिमला में हिमालय मिशन स्टेशन, 1845 ई.

शिमला मेंईसाई प्रोटेस्टेंट मिशन की स्थापना 1845 में हिमालय मिशन के एक घटक के रूप मेंकी गई थी, जिसमें माइकल विल्किंसन इसके नेता के रूप में कार्यरत थे। विल्किंसन और उनका परिवार 30 मार्च 1845 को शिमला पहुंचे और उसके बादकोटगढ़ गए। वहां कई महीनों तक काम करने के बाद, उन्हें चिकित्सा कारणों सेशिमला में स्थानांतरित होना पड़ा। शिमला लौटने पर, माइकल विल्किंसन ने तुरंतस्कूलों का निर्माण करके अपने मिशनरी प्रयासों की शुरुआत की। इनमें से एकम्यूनिसिपल बोर्ड स्कूल था, जिसका उद्देश्य पहाड़ी प्रमुखों और अन्य लोगों के बेटों कोशिक्षित करना था। उन्होंने ठाकुर के किले के पास, ठियोग में यात्रियों के लिए एकस्कूलहाउस और एक विश्रामगृह का निर्माण किया। शिमला में अपने शुरुआती प्रवासके दौरान, विल्किंसन ने तीन स्कूलों की स्थापना की।

शिमला बैपटिस्ट मिशन (1865 ई.)

शिमला बैपटिस्ट मिशन की स्थापना रेव. गुलज़ार शाह ने 1865 में कलकत्ता के साउथकोलिंगा स्ट्रीट में की थी। भारत सरकार के लोक निर्माण विभाग में क्लर्क केरूप में उनके पद ने उन्हें पहली बार शिमला पहुँचाया। इस मिशन को कई बंगालियोंकी श्रम सहायता और भारत सरकार, शिमला यूनियन चर्च और बैपटिस्ट मिशनरीसोसाइटी के अधिकारियों से ज़्यादातर वित्तीय सहायता के साथ निष्पादित किया गयाथा।गुलज़ार शाह ने सभी धर्मों के स्वदेशीईसाइयों के लिए सब्बाथ सेवाओं की शुरुआत की। उस समय शिमला में कहीं भी ऐसीकोई सेवा आयोजित नहीं की गई थी। उन्होंने मैदानी इलाकों के हिंदुओं औरमुसलमानों के साथ-साथ उनके समुदायों में पहाड़ी निवासियों को भी उपदेश दिए। 1866 में, दो पुरुष और एक महिला शिक्षकों को नियुक्त किया गया; फिर भी, कोईप्रत्यक्ष तरण नहीं हुआ और चर्च की सदस्यता में कोई वृद्धि नहीं हुई। (Gazetteer of the Simla District, 1904)

कांगड़ा में चर्च मिशनरी सोसाइटी का मिशन स्टेशन (1854 ई.)

1849 में कांगड़ा (पंजाब का हिस्सा) पर ब्रिटिश विजय के बाद, डिवीजन के कमिश्नरऔर बाद में पंजाब के लेफ्टिनेंट-गवर्नर डोनाल्ड मैकलियोड ने चर्च मिशनरी सोसाइटीसे कांगड़ा और धर्मशाला में मिशन बनाने का आग्रह किया। कांगड़ा का दौरा सबसेपहले 1851 में कोटगढ़ से रेव. जॉन नेपोमुक मर्क ने किया था। (Church Missionary Society, 1853–1854) 1852 के वसंत में, आर्कडेकन प्रैट ने चर्च मिशनरी सोसाइटी से कोटगढ़ स्टेशन के साथ मिलकर इसे लागू करने का जोरदार आग्रह किया। 15 दिसंबर 1853 को रेवरेंड मर्क के कांगड़ा आगमन Church Missionary Society, 1853–1854) और उसके बाद चर्च मिशनरी सोसायटी द्वारा की गई कार्रवाई के बाद 1854 की शुरुआत में मिशन ने यहां काम करना शुरू किया। (Panjab District Gazetteers, 1928) अपने आगमन के कुछ समय बाद ही उन्होंने कांगड़ा के बाज़ारों और आस-पास केगांवों में सुसमाचार का प्रचार करना शुरू कर दिया। कांगड़ा और आस-पास के शहरजवालामुखी के उस क्षेत्र में हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण केंद्र होने के कारण उन्हें अक्सरप्रतिरोध का सामना करना पड़ा। अलंकृत और विस्तृत रूप से सुसज्जित मंदिर इससच्चाई के पुख्ता सबूत के रूप में काम करते हैं। इसके

बावजूद, रेवरेंड मर्क ने सितंबर1854 में एक ब्राह्मण को सफलतापूर्वक बपतिस्मा दिया, जो कई वर्षों से जवालामुखीमें लड़कों के स्कूल में शिक्षक था। मर्क का बपतिस्मा एक गंभीर लेकिन खुशी काअवसर था। कांगड़ा से लगभग ग्यारह मील दूर एक पहाड़ी स्टेशन धर्मशाला में रहनेवाले अधिकांश यूरोपीय लोगों ने मिशन में गहरी दिलचस्पी दिखाई और पर्याप्तसमर्थन दिया। (Church Missionary Society, 1855)

1992 की शुरुआत में, कांगड़ा में चर्च मिशनरी सोसायटी के संचालन को चर्च ऑफकनाडा की मिशनरी सोसायटी (एम.एस.सी.सी.) को सौंप दिया गया, इस उम्मीद केसाथ कि यह जिले के 1,000,000 निवासियों के बीच बेहतर प्रगति हासिल करेगी। चर्च ऑफ कनाडा की मिशनरी सोसायटी के रेव. आर.एच.ए. हसलाम ने कुछउल्लेखनीय बिंदु रखे जो पूर्ण उद्धरण के योग्य हैं। उन्होंने टिप्पणी की "कई व्यक्तियोंने हाल ही में हुई उथल-पुथल की उत्पत्ति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है, फिर भीकारण और समाधान दोनों को समझना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।" पिछले पचास वर्षोंमें शक्तिशाली ताकतों ने काम किया है, और कई जड़ जमाए हुए विचार पैटर्न औरप्रथाओं को ध्वस्त किया है जिन्हें पहले अपरिवर्तनीय और अजेय माना जाता था।शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि ने जाति और परंपरा की बाधाओं से खुद को मुक्त करने कीइच्छा को बढ़ावा दिया है। (Church Missionary Society, 1909)

2. लाहौल, स्पीति, किन्नौर और शिमला में आदिवासियों के बीच मोरावियन मिशन

बोहेमिया और मोराविया पहले मध्य यूरोप में स्थित दो स्वायत्त राज्य थे। इसके बाद, उन्हें ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के प्रांतों के रूप में शामिल किया गया। प्रथम विश्व युद्धके बाद, वे चेकोस्लोवाकिया की राजशाही का अभिन्न अंग बन गए। बोहेमिया, जोवर्तमान में चेक गणराज्य का उत्तरी प्रांत है, जर्मनी के दक्षिण-पूर्व में स्थित है।मोराविया बोहेमिया और स्लोवाकिया के बीच स्थित पूर्वी प्रांत है। (Langton, 1956) मोरावियन मिशन की स्थापना बाद में 1854 में क्येलंग में की गई, जो वर्तमान मेंहिमाचल प्रदेश में लाहौल और स्पीति क्षेत्र का मुख्यालय है। (Gazetteer of the Kangra District, 1899) मारोवियन मिशनरियों ईसाई मत के प्रचार प्रसार के साथ इन क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक सहायता के लिए कई कार्यक्रम संचालित किये।

3. आनी, चंबा और सिरमौर में मिशन स्टेशन

कुल्लू या सराज में कोई धार्मिक प्रशासन मौजूद नहीं था। एनी मिशन स्टेशन कीस्थापना रेव. मार्कस कार्लटन ने की थी, जो एक अमेरिकी मिशनरी थे, जिन्हें नी मेंदफनाया गया था। (Chetwode, 1972) मार्कस कार्लटन का जन्म मार्शफील्ड, वर्मोंट में हुआ था, और उन्होंने 1854 में ईस्ट विंडसर प्रेस्बिटेरियन कॉलेज से स्नातककिया था। इसके बाद, उन्होंने चालीस-चार वर्षों तक मिशन क्षेत्र में काम किया, औरकभी भी छुट्टी पर अमेरिका नहीं लौटे। भारत में कार्लटन के प्रयासों ने उन लोगों केनिर्माण के खिलाफ एक लंबे संघर्ष का गठन किया, जिन्हें पहले 'मिश्रित ईसाई' कहाजाता था, जो उन भारतीयों को संदर्भित करते थे जिन्हें मिशन की भूमि पर रोजगार औरआवास प्रदान किया गया था। मार्कस कार्लटन और उनकी पत्नी भयंकर अकाल केदौरान मैदानी इलाकों से एनी पहुंचे, उनके साथ कई धर्मांतरित पंजाबी पुरुष भी थे, जिन्होंने स्थानीय पहाड़ी लड़कियों से शादी की और मिशन द्वारा उनके लिए खरीदी गईजमीन पर खुद को किसान के रूप में स्थापित किया। चैपल शुरू में घर से जुड़ीसहायक संरचनाओं में से एक था। इसके बाद, इसे सांगरी के राणा रघुबीर सिंह कोबेचने के बाद, ईसाइयों ने एक पत्थर का चैपल बनाया। (Chetwode, 1972) चंबा राज्य में ईसाई मिशन की स्थापना 1863 में स्कॉटलैंड चर्च के पादरी रेव. विलियम फर्ग्यूसन ने की थी और उन्होंने इसे एक दशक तक एक स्वतंत्र मिशन के रूपमें संचालित किया। 1864 में, राजा श्री सिंह ने मिशन के मुख्यालय के लिए एकमहत्वपूर्ण स्थान आवंटित किया। (Punjab Government, 1904) 1895 में लुधियाना के अमेरिकन प्रेस्बिटेरियन मिशन ने सिरमौर राज्य में मिशनरीगतिविधियाँ शुरू कीं, हालाँकि इन प्रयासों का क्रियान्वयन भारतीय प्रचारकों द्वाराकिया गया। अंबाला के अमेरिकी मिशनरियों ने नाहन (सिरमौर) में भारतीय मिशनरी के प्रयासों का मूल्यांकन करने के लिए समय-समय पर दौरे किए। (Panjab Government. 1907)

मत परिवर्तन के कारण एवं प्रेरणाएँ

हिमाचल प्रदेश में ईसाई मिशनरियों के आगमन के पश्चात उनके सम्पर्क में आने के बाद कई लोग ईसाई मत में मत परिवर्तन कर गये। इसके पीछे केवल ईसाई मिशनरियों द्वारा अपने मत का प्रचार प्रसार नहीं था अपितु इसके पीछे कई सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कारक के साथ आर्थिक एवं आध्यात्मिक प्रेरणाएँ भी शामिल है।

III. सामाजिक कारण: अस्पृश्यता और असमानता

दलित और निम्नवर्गीय समुदायों को सदियों तक सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव का सामना करना पड़ा। मिशनरियों ने इन वर्गों को समानता, भाईचारे और सम्मान का संदेश दिया, जिससे वे ईसाई मत की ओर आकर्षित हुए। (Oddie, 1997) मत परिवर्तन का मुख्य कारण सामाजिक भेदभाव है जो अनुसूचित जाति के लोग हैं उनसे सामान्यवर्ग के लोगों द्वारा उनकी उपेक्षा करना एवं उनके साथ हीन भावना रखना, सामाजिक छुआ छूत करना मुख्य कारण है जब यह लोग ईसाई मत के संपर्क में आते हैं। जब चर्च में उन्हें किसी भीप्रकार की सामाजिक भेदभाव नहीं दिखता अपितु समानता का भाव दिखाई देता है तो वह प्रभुमसीह और प्रेम की बात करते हैं और अपने मत को परिवर्तित कर देते हैं। साथ में जो लोग आर्थिकरूप से कमजोर होते हैं या जिनका किसी बीमारी या मानसिक तनाव का शिकार होते हैं उन लोगोंके लिए भी चर्च में प्रार्थना करते हैं अस्पताल में उनकी सभी बीमारियों की इलाज के लिए आर्थिक सहायता देते हैं इन सब कार्य से भी वह व्यक्ति ईसाई मत में परिवर्तित हो जाते हैं। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

आर्थिक कारण: आजीविका और सुरक्षा

मिशनरियों ने गरीब वर्गों को आर्थिक सहायता, रोजगार और संरक्षण प्रदान किया। कई क्षेत्रों में मतांतरण के बाद लोगों को भूमि और शिक्षा के अवसर मिले, जिससे उनके जीवन में स्थिरता आई। इसके अतिरिक्त, मिशनरियों द्वारा स्थापित संस्थाओं ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया। ईसाई मत में परिवर्तन का मुख्य प्रेरणा उन्हें आर्थिक रूप से सहायता का मिलना है। क्योंकि ईसाईमत में परिवर्तित हुए लोग आर्थिक रूप से कमजोर होते है लेकिन जब वह ईसाई मत में परिवर्तित हो जाते है तो उनका रहन सहन में पूरी तरह से बदलाव आ जाता है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) ईसाई मतपरिवर्तन करने के लिए वो लोगों को धन देकर प्रोत्साहित करते है कुछ लोग पैसे लेने के बाद पुनः पारंपरिक धर्म को मानने लग पड़ते हैं। लेकिन जो गरी समुदाय है वह पैसे लेकर ईसाई मत में ही रहते है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

IV. शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का आकर्षण

ईसाई मिशनरियों ने भारत में पश्चात पद्धति की शिक्षा और चिकित्सा सेवाओं की नींव रखी। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वास्थ्य सेवाओं को समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाया। अस्पताल, अनाथालय, और विद्यालय उनके प्रमुख माध्यम बने जिनके द्वारा उन्होंने सामाजिक सेवा और ईसाई मत का प्रचार दोनों को जोड़ा। (Bauman, 2013) हिमाचल प्रदेश में ईसाई मिशनरियों द्वारा कई मिशनरी स्कूलों एवं हॉस्पिटल की स्थापना की गई। ईसाई मिशनरियों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमीशैली की शिक्षा पद्धति (कक्षा-पद्धति, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली) का प्रारंभ किया।ब्रिटिशशासन के शुरुआती वर्षों में, मिशनरियों ने शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने कई स्कूल खोले जहां प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा दी जाती थी। मिशनरियों का उद्देश्य ईसाई मत का प्रचार के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा का प्रसार करना था। उन्होंने स्थानीय भाषाओं में शिक्षादेने पर बल दिया ताकि अधिक से अधिक लोगों तक ज्ञान पहुँच सके। मिशनरियों द्वारा निर्मितशिक्षण सामग्री में ईसाई मत के साथ-साथ

नैतिकता और सामान्य विषय शामिल थे।सरकार नेमिशनरियों को शिक्षा के कार्य में आर्थिक सहायता प्रदान की, क्योंकि उन्हें माना गया किमिशनरी शिक्षा व्यवस्था के विस्तार में सहायक हैं। हालांकि, मिशनरियों की शिक्षा प्रणाली में ईसाई मत का प्रभाव स्पष्ट था।इस प्रकार, इस अवधि में मिशनरियों ने भारतीय शिक्षा के प्रारंभिकविकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके प्रयासों ने बाद की औपनिवेशिक शिक्षा नीतियों केलिए नींव तैयार की। ईसाई मिशनरी द्वारा बीमारी के समय इलाज के लिए सहयोग किया जिसके कारण जब स्वास्थ्य हुआ तो ईसाई मत में परिवर्तन कर लिया। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) ईसाई मिशनरी द्वारा स्थापित स्कूलों में आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग के बच्चों को पूरा कंशेशन मिलता है जिसके कारण लोग ईसाई मत में मत परिवर्तन कर लेते है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

औपनिवेशिक संरक्षण

ब्रिटिश प्रशासन ने यद्यपि औपचारिक रूप से मत परिवर्तन का समर्थन नहीं किया, परंतु मिशनरियों को कार्य करने की छूट दी। उनके विद्यालयों और अस्पतालों को अनुदान व भूमि उपलब्ध कराई गई, जिससे उनका कार्य और सशक्त हुआ (Frykenberg, 2008)। इस प्रकार, औपनिवेशिक शासन और मिशनरियों के बीच एक अप्रत्यक्ष सहयोग का संबंध स्थापित हो गया।

आर्थिक एवं आध्यात्मिक प्रेरणाएँ

भारत में ईसाई मिशनरियों की विदेशी धन पर निर्भरता किस हद तक है और इसका उपयोग कैसे मतांतरण के लिए किया जाता है इसके अनेक प्रमाण उपलब्ध है। भारतीय ईसाईयों द्वारा विदेशी मिशनरियों के स्वागत का एक बड़ा कारण आर्थिक है। (Asirvatham, 1955) जहाँ तक आर्थिक सहयोग का प्रश्न है तो यह एक खुला रहस्य है कि भारतीय चर्च अपनी निर्भरता की स्थिति से बाहर नहीं आ सके है। यह बात इसी से समझी जा सकती है कि भारत की राष्ट्रिय ईसाई परिषद कीसालाना आय में से मात्र 6% राशी ही भारतीय स्त्रोतो से आती है, शेष विदेशी मिशनरियों से आतीहैं। 'इंडियन एक्सप्रेस' में (The NGOs that will come under the Lokpal's ambit' जनवरी3/2012 द्वारा श्यामलाल यादव) छपी एक रिपोर्ट के अनुसार 515 ईसाई मिशनरियों को विदेशों से 2,003.75 करोड रुपये की सहायता मिली। माना जाता है कि इस पूरी राशि का इस्तेमालमतांतरण में किया गया।मेरे परिवार में सगे संबंधियों का ईसा मसीह में विश्वास था। परन्तु इस पर मेंसंदेह करता था। तब मुझे एक रात ईसा मसीह ने मुझे आवाज़ दी की तुम मुझ पर विश्वास करो मैंतुम्हारे साथ हूँ जो व्यक्ति बीमारी, या किसी भी समस्या से लड़ रहा है तुम उन लोगों का मेरे नाम से कल्याण करो, उस दिन के बाद मैंने ईसा मसीह में अपनी पूरी आस्था लगाई और मुझे इसका परिणाम भी मिला। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) मेरी दादी दूसरे राज्य से थे वह पहले से मसीह में विश्वास करते थे। मेरा दादी के यहाँ आने सेपहले हमारे पूर्वज हिन्दू धर्म को मानते थे। दादा के विवाह के बाद वो दादी के आस्थाओं सेप्रभावित हुए और अब हम सब ईसा मसीह को मनाते हैं इसी कारण हमने अपना मत परिवर्तन करदिया। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) हिन्दू संस्कृति की सारी पूजा पध्दति बहुत बहुत जटिल है और उसके सारे मंत्रों-उच्चारण भी संस्कृत में है।जो आम व्यक्ति के समझ में नहीं आ सकते लेकिन चर्च की सारी प्रेर हिन्दी और स्थानीय भाषा मेंहोने के कारण मुझे आसानी से समझ आ गई जिस कारण मेरा विश्वास मसीह की शिक्षाओं से प्रभावित हो गया। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) परिवर्तन का मुख्य कार्य आर्थिक प्रलोभन होता है। जो व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर है। उन व्यक्तियों को आर्थिक सहायता देनाजिसके कारण वहां प्रभु मसीह की और आकर्षित हो जाते हैं कि प्रभु मसीह के व्यक्ति हमारी सेवाकर रहे हैं हमें हर रूप से संपन्न करने की कोशिश कर रहे हैं इसी के कारण वह लोग ईसाई मत मेंपरिवर्तित हो जाते हैं। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) सबसे अधिक प्रेरणा अगर कोई ईसाई मतसे संबंधित नहीं हैं और चर्च में आ जाए, एवं जो व्यक्ति ईसाई मत का मानता है वह किसी बीमारीसे ग्रसित है तो उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए चर्च मे सामुदायिक प्रार्थना की जाती हैं। उसकेआर्थिक सहायता के लिए धन एकत्र किया जाता है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों के कारण हिमाचल प्रदेश में ईसाई मत को मानने की जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है जिसका प्रत्यक्ष अर्थ है कि मत परिवर्तन की प्रक्रिया समाज में चल रही है जो एक सामाजिक समस्या है हिमाचल प्रदेश मे 1981, 2001 से 2011 तक ईसाई जनसंख्या इस प्रकार से है :-

सारणी 1 हिमाचल प्रदेश मे 1981, 2001 से 2011 तक ईसाई जनसंख्या दर को प्रदर्शित कर रही है

Year	Total Population of HP	Christan Population	Proportion of Christians in Total Population (%)
1981	4,280,818	3954	0.09
2001	6,077,900	7687	0.13
2011	68,64,602	12646	0.18

Source: census data 1981, 2001, 2011

रेखा चित्र 1 हिमाचल प्रदेश में 1981, 2001 एवं 2011 की ईसाई जनसंख्या दर को दिखा रहा है

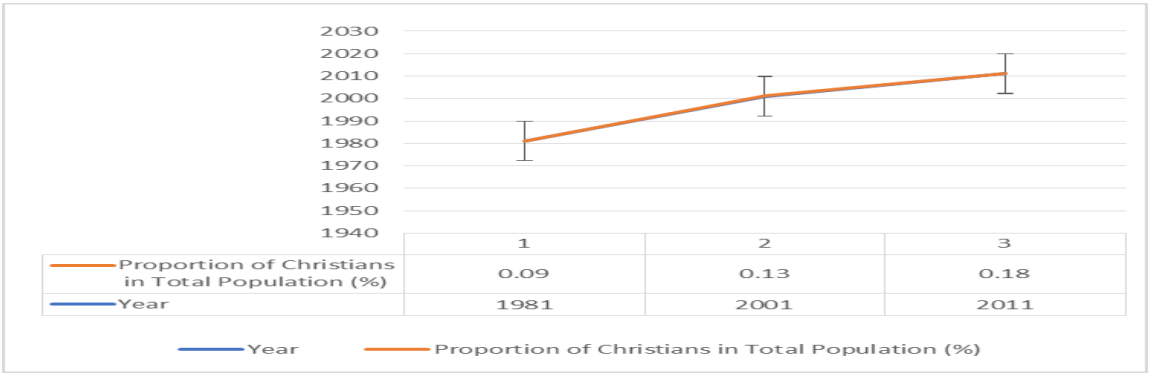

रेखा चित्र 1 हिमाचल प्रदेश में 1981, 2001 और 2011 में ईसाई जनसंख्या को प्रदर्शित कर रहा है। वर्ष 1981 में हिमाचल प्रदेश की जनसंख्या का 0.09 प्रतिशत था, अलगे 20 वर्षों मे यह आंकड़ा बढ़ कर 0.13 हो गया। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार ईसाई जनसंख्या 0.18 प्रतिशत है। इसके पश्चात का अभी तक जनगणना नहीं हुई है। इस प्रकार उपरोक्त रेखा चित्र यह प्रदर्शित करता है की किस प्रकार से हिमाचल में प्रति वर्ष ईसाई मत के अनुयायी बढ़ रहे है।

मत परिवर्तन एक सामाजिक समस्या के रूप में

हिमाचल प्रदेश ही नहीं अपितु पूरे भारत में मत परिवर्तन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि यह एक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति और समुदाय दोनों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है। जब कोई व्यक्ति या समूह अपना पारंपरिक धर्म त्यागता है, तो उसके साथ उसकी सामाजिक स्थिति, जातीय पहचान और पारिवारिक संबंध भी बदल जाते हैं। इस प्रकार मत परिवर्तन केवल आध्यात्मिक निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया बन जाता है। (Bauman,2013)

सामाजिक असंतुलन

मत परिवर्तन समाज के पारंपरिक संतुलन को तोड़ देता है। भारत की सामाजिक संरचना जाति, परंपराओं एवं मूल्यों और परिवार पर आधारित है। जब कोई समुदाय नई धार्मिक पहचान अपनाता है, तो वह पारंपरिक ढाँचे को चुनौती देता है, जिससे सामाजिक एकता कमजोर होती है। (Durkheim, 1897) जो लोग ईसाई मत में परिवर्तित हो जाते है, वह परिवार पारंपरिक धर्म से किनारा कर लेते है एवं उनके रहन सहन खान पान के साथ साथ सांस्कृति में भी परिवर्तन आ जाता है। वह अपने पारंपरिक त्योहार मकर संक्रांति, बैसाखी, राम नवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, दशहरा एवं दीपावली, को मनाना छोड़ कर उसे काल्पनिक मनाते है। अपितु उसके स्थान पर गुड फ्राइडे, इस्टर और क्रिसमस को मनाने लगते है। गाँव के अन्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम से दूरी बनाए रखते हैं। मत परिवर्तन का प्रभाव इतना होता है कि देवी देवताओं को नदी में विसर्जित कर देते है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

पहचान का संकट

मत परिवर्तन व्यक्ति की सांस्कृतिक पहचान को बदल देता है। मत परिवर्तन व्यक्ति न तो अपने पुराने समाज में रह पाता है और न ही नए समाज में तुरंत स्वीकृति पाता है। इस स्थिति में वह पहचान के द्वंद्व से गुजरता है। (Bauman, 2013) भारत में मत परिवर्तन ईसाइयों को "ब्रिटिश मत" अपनाने वाला कहा गया, जिससे वे स्थानीय समाज में "विदेशी" समझे गए। यह धार्मिक परिवर्तन कई बार सांस्कृतिक विस्थापन का कारण बना। (Oddie, 1979) मत परिवर्तन के पश्चात ईसाई मत को मानने लगे और उनके सिद्धांतों के अनुसार ही अपनी पहचान बनाई। लेकिन जब ईसाई मत में भी विश्वास कमजोर हो गया। उसके पश्चात अपनी पहचान का संकट आ गया। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

पारिवारिक विघटन

भारत के साथ साथ हिमाचल प्रदेश में परिवार सामाजिक जीवन की मूल इकाई है।जब परिवार का कोई सदस्य नया मत अपनाता है, तो परिवार के भीतर मतभेद उत्पन्न होते हैं। कई समाजशास्त्रियों ने इसे पारिवारिक विघटन का कारण बताया है। उदाहरणस्वरूप, केरल और तमिलनाडु में मत परिवर्तन रने वाले परिवारों को समाज से बहिष्कृत होना पड़ा, जिससे उन्हें अलग समुदायों में बसना पड़ा। (Neill, 1984) परिवार ने जब ईसाई मत अपना लिया तो उनके संगे संबंधियों एवं परिवार के अन्य सदस्यों ने उनसे अलग हो गया। उनके साथ किसी भी प्रकार का कोई लेन देन नहीं रखा। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) जब व्यक्ति ने ईसाई मत में मतांतरण हो गया तो उनके पिता ने पुनः पारंपरिक विश्वास अपनाने को कहा लेकिन जब वह नहीं माना तो उसे उसकी पत्नी के साथ घर से निकल दिया। जिसके पश्चात उसका गाँव के अन्य सदस्यों ने बहिष्कार कर दिया। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

सामुदायिक तनाव और हिंसा

मत परिवर्तन उत्पन्न अविश्वास और भय कई बार सामुदायिक संघर्षों का कारण बनता है। औपनिवेशिक काल से ही मत परिवर्तन को "राजनीतिक शक्ति-संतुलन" के रूप में देखा गया, जिससे स्थानीय समाजों में आक्रोश फैला। (Bauman, 2013) स्वतंत्र भारत में भी ओडिशा (1999), मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों में मत परिवर्तन विरोधी हिंसाएँ हुईं। (Frykenberg, 2008) मिशनरियों के द्वारा हिन्दू समाज के लोगों मे उनके देवी देवताओं को शैतान बताकर उनका अपमान करते है एवं देवी देवताओं को धर से बाहर निकल कर फैक देते है। जिसके कारण समाज के दूसरे लोगों इसे अपनी परंपराओं एवं विश्वास के साथ खिलवाड़ मानकर उनका विरोध करते है एवं उनके साथ मार पीट, वैमनस्य का रखते हैं। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

रामपुर में जब 2017 में अमेरिका के फादरी को बुलाया गया था। तो उसके लिए एक ईसाई मत के अनुयायी के लिए एवं ईसाई मत के प्रयास प्रसार के लिए एक सभा का आयोजन किया गया था। जिसका रामपुर के स्थानीय लोगों ने इसका विरोध किया। जिसके लिए हिन्दू समाज के लोगों पर मुक़ादमा चलाया गया जो आज भी न्यायालय में चल रहा है। (अमर उजाला ब्यूरो, 2017))

राजनीतिकरण और विधिक विवाद

स्वतंत्रता के बाद मत परिवर्तन का राजनीतिक मुद्दा बन गया। औपनिवेशिक काल से मिशनरी गतिविधियों को "ब्रिटिश प्रभाव" का प्रतीक माना गया था। (Oddie 1997) स्वतंत्र भारत में यह विवाद "धर्म स्वतंत्रता" बनाम "राष्ट्रीय अखंडता" के बीच खिंच गया। कई राज्यों द्वारा पारित "धर्म स्वतंत्रता अधिनियम" इस बात के प्रमाण हैं कि मत परिवर्तन अब सामाजिक-राजनीतिक विवाद का विषय बन गया है। (Frykenberg, 2008)

सामाजिक एकता पर प्रभाव

भारत की पहचान उसकी "विविधता में एकता" है। इस एकता को चुनौती देता है क्योंकि यह समुदायों को धार्मिक आधार पर विभाजित करता है। (Durkheim 1897) के अनुसार, समाज का अस्तित्व उसकी सामाजिक एकात्म्यता पर निर्भर करता है। अब लोग पारंपरिक त्योहार को न मनाकर क्रिसमस को मनाते है। पारंपरिक मूल्यों को मानने वाले समाज से दूरियाँ बनाना अपने विवाह, त्योहार कार्यक्रम में अपने ईसाई मत के लोगों को ही निमंत्रण करना। वह अपने विवाह के रस्में पूरी तरह ईसाई मत के अनुसार ही होती है। जब ईसाई मत में परिवर्तित औरत का देहांत हुआ। तो उसका अंतिम संस्कार ईसाई मत के सिद्धांतों के अनुसार उसे दफ़नाया जाने लेकिन हिन्दू समुदाय के लोगों ने उसका विरोध कर उसका अंतिम संस्कार पारंपरिक तरीक़े के साथ किया। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) ईसाई मत में आने का बाद हिन्दू सांस्कृतिक को त्याग दिया। पारंपरिक विश्वास मंदिर और पूजा पद्धति उसका पालन रिति रिवाज बदल दिया है अब किसी भी प्रकार की पारंपरिक धर्म सांस्कृतिक को नहीं अपनाते है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025)

पारंपरिक विश्वास, मूल्यों एवं देवी देवताओं को शैतान बताना

ईसाई मत में परिवर्तित होने के बाद पहले जिन देवी देवताओं को मानते थे उन्हें अब नहीं मनाते है स्थानीय समाज के कार्यक्रम में जाते है। किंतु धार्मिक कार्यों पूजा पद्धति आदि से दूरी बनाए रखते है। (व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, 2025) ईसाई मिशनरियों के द्वारा हिन्दू समाज के लोगों मे उनके देवी देवताओं को शैतान बताकर उनका अपमान करते है एवं देवी देवताओं को धर से बाहर निकल कर फैक देते है। जिसके कारण समाज के दूसरे लोगों इसे अपनी परंपराओं एवं विश्वास के साथ खिलवाड़ मानकर उनका विरोध करते है एवं उनके साथ मार पीट, वैमनस्य का रखते हैं एवं उन्हें समाज से बहिष्कृत कर देते है जिससे समाज की एकता का विघट होने लगता है यह ईसाई मिशनरियों का प्रचार प्रसार की सबसे बड़ी समस्या है।

V. ईसाई मिशनरियों का सामाजिक प्रभाव

दण्ड आरेख 1 "मिशनरी सेवाओं का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव: शिक्षा, स्वास्थ्य और परंपराओं में बदलाव का अध्ययन"

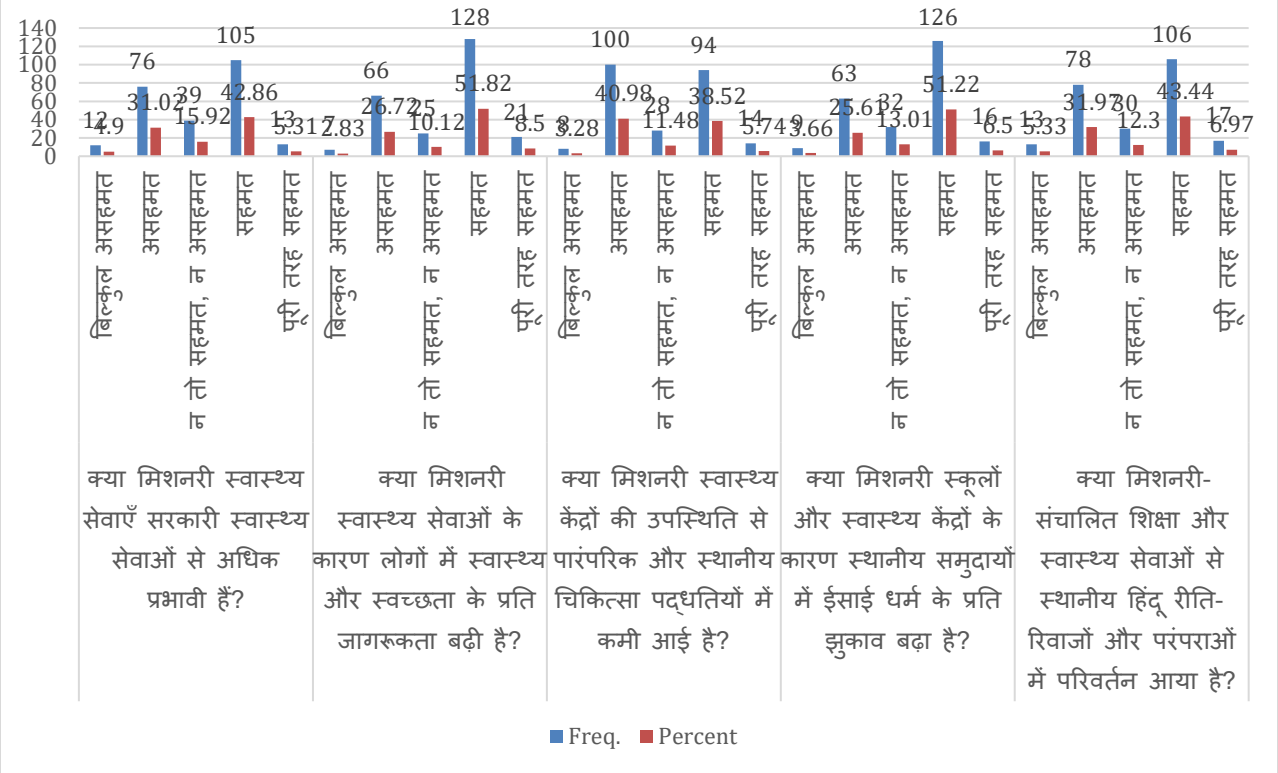

स्रोत: प्राथमिक सर्वेक्षण से लेखक द्वारा संकलित (Author compilation from primary survey)

दण्ड आरेख 1 मिशनरी सेवाओं का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव: शिक्षा, स्वास्थ्य और परंपराओं में बदलाव की प्रवृत्ति को दर्शाता है दण्ड आरेख में पाँच प्रश्नों के उत्तरों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम प्रश्न, "क्या मिशनरी स्वास्थ्य सेवाएँ सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं से अधिक प्रभावी हैं?" के उत्तर दाताओं से स्पष्ट होता है कि 42.86 प्रतिशत सहमत, लगभग 5.31 पूरी तरह सहमत पाए गये। जबकि 31.02 प्रतिशत असहमत और 4.9 बिल्कुल असहमत,एवं 15.92 प्रतिशत न तो सहमत न असहमत थे। इस से स्पष्ट होता है कि मिशनरियों की स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध सरकारी सेवाओं से अधिक प्रभावी है। लेकिन एक वर्ग इससे असहमत है। द्वितीय प्रश्न, "क्या मिशनरी स्वास्थ्य सेवाओं के कारण लोगों में स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है? के उत्तर दाताओं से स्पष्ट होता है कि 51.82 प्रतिशत सहमत, लगभग 8.5 पूरी तरह सहमत पाए गये। जबकि 26.72 प्रतिशत असहमत और 2.83 बिल्कुल असहमत,एवं 10.12 प्रतिशत न तो सहमत न असहमत थे। इस से स्पष्ट होता है कि मिशनरी स्वास्थ्य सेवाओं के कारण स्थानीय लोगों में स्वास्थ्य और और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि मिशनरी से पहले ही स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति लोग जागरुक थे। तृतीय प्रश्न,"क्या मिशनरी स्वास्थ्य केंद्रों की उपस्थिति से पारंपरिक और स्थानीय चिकित्सा पद्धतियों में कमी आई है?" के उत्तर दाताओं से स्पष्ट होता है कि 38.52 प्रतिशत सहमत, लगभग 5.74 पूरी तरह सहमत पाए गये। जबकि 40.98 प्रतिशत असहमत और 3.28 बिल्कुल असहमत,एवं 11.48 प्रतिशत न तो सहमत न असहमत थे । इस से स्पष्ट होता है कि मिशनरी स्वास्थ्य केंद्रों की उपस्थिति से पारंपरिक और स्थानीय चिकित्सा पद्धतियों में कोई कमी नहीं आई है लोगों पहले की तरह ही पारंपरिक तरीक़ों को अपनाते है । चतुर्थ प्रश्न, "क्या मिशनरी स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों के कारण स्थानीय समुदायों में ईसाई मत के प्रति झुकाव बढ़ा है?" के उत्तर दाताओं से स्पष्ट होता है कि 51.22 प्रतिशत सहमत, लगभग 6.5 पूरी तरह सहमत पाए गये। जबकि 25.61 प्रतिशत असहमत और 3.66 बिल्कुल असहमत,एवं 13.01 प्रतिशत न तो सहमत न असहमत थे। इस से स्पष्ट होता है कि मिशनरी संचालित स्वास्थ्य सेवाओं और स्कूलों के कारण ही लोगों ने अपने मत को ईसाई मत में परिवर्तित कर लिया। पंचम प्रश्न, "क्या मिशनरी-संचालित शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं से स्थानीय हिंदू रीति-रिवाजों और परंपराओं में परिवर्तन आया है?" के उत्तर दाताओं से स्पष्ट होता है कि 43.44 प्रतिशत सहमत, लगभग 6.97 पूरी तरह सहमत पाए गये। जबकि 31.97 प्रतिशत असहमत और 5.33 बिल्कुल असहमत,एवं 12.3 प्रतिशत न तो सहमत न असहमत थे। इस से स्पष्ट होता है कि मिशनरी संचालित स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा के कारण हिन्दू रीति रिवाजों में परिवर्तन आया है।

समग्र रूप से यह दण्ड आरेख यह प्रदर्शित करता है कि मिशनरी संचालित स्वास्थ्य सेवाएँ सरकारी सेवाओं से अधिक प्रभावी है। लेकिन मिशनरियों के कारण ही लोगों में स्वास्थ्य और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता नहीं आई, अपितु मिशनरियों से पहले भी लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूक थे। मिशनरियों की स्वास्थ्य सेवाओं के कारण पारंपरिक चिकित्सा पद्धति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा लोग अभी भी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति का उपयोग करते है। मिशनरी स्वास्थ्य केंद्रों और स्कूलों के कारण स्थानीय समुदायों के लोगों का ईसाई मत के प्रति झुकाव बढ़ रहा है। जिसके कारण हिन्दू समुदाय की रीति रिवाजों में परिवर्तन आ रहा है ।

VI. निष्कर्ष

शोध पत्र में की गई प्रमाणित के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ईसाई मिशनरियों ने अपने मत के प्रचार प्रसार के लिए सबसे पहले मिशनरियों का कार्य लोगों से संबंध

स्थापित करना होता था। जिसके लिए मिशनरी अपनी गतिविधियों को माध्यम बनाती, जिसमें स्कूलों की स्थापना, कुष्ठ रोगियों की सेवा, चिकित्सालय और चिकित्साकर्मी की नियुक्ति दूर दराज के क्षेत्रों में डिस्पेंसरी की स्थापना और लोगों के बीच ईसा मसीह की शिक्षाओं को पहुँचा था। अपने कार्य की पूर्ति के लिए मिशनरियों ने अपनी गति को सतत प्रक्रिया में लाया। वह जिस क्षेत्र में गये उस की भाषा में बाइबिल का अनुवाद किया एवं वहाँ की संस्कृति को समझने का प्रयास किया। ताकि उसके अनुसार कार्य को किया जाए। मिशनरी जिस क्षेत्रों गये वहाँ पर चर्च की स्थापना की । लोगों को ईसाई मत परिवर्तन करवाया। ईसाई मिशनरियों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य स्थानीय समुदाय के साथ संबंध स्थापित करना था। जिसके लिए उन्होंने अपनी गतिविधियाँ को माध्यम बनाया। जिससे प्रभावित हो कर लोग ईसाई मत को अपनाने लग गये । ईसाई मत में मत परिवर्तन के लिए कई कारण और प्रेरणाओं रही। जिसमें सबसे बड़ा करण हिन्दू समाज में सामाजिक भेदभाव के कारण छुआ-छूत का होना है। छुआ-छूत के कारण अनुसूचितजाति के लोगों न तो सामान्य वर्ग के लोगों के घरों में आने का अधिकार है ना उनके समान बैठने का यह छुआ-छूत घरों से लेकर मंदिरों तक है। मंदिरों मे उनको प्रवेश नहीं है, मंदिर को देवी देवताओं को वह स्पर्श तक नहीं कर सकते। लेकिन जब उनका परिचय ईसाई मत के लोगों के साथ होता है तो वह उन्हें ऐसा प्रतीत करवाते हैं कि हिन्दू मंदिरों में तो छुआ-छूत है लेकिन प्रभु यीशु मसीह के सामने चर्च में कोई भेद भाव नहीं होता है। जिसके कारण वह मत परिवर्तन कर लेते है।आर्थिक सहायता जो व्यक्ति आर्थिक रुप से कमजोर है मिशनरी लोगों द्वारा उन्हें सहायता प्रदान की जाती है यह सहायता प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भी हो सकती है। देव दोष भी एक कारण है जिसके प्रभाव से बचने के लिए कई लोगों चर्च में जाकर प्रार्थनाएँ करते है। जब उन्हें इन प्रार्थनाओं से लाभ मिलता है तो वह लोग मत परिवर्तन कर लेते है। कई लोगों को जब उनके रोगों से उपचार नहीं मिला तो अंत में वह चर्च का आकर स्वास्थ्य हुए, इसके कारण भी मत परिवर्तन हुआ। जो उपरोक्त कारण रहे उन करणों से प्रेरित होकर भी कई व्यक्तियों ने मत परिवर्तन किया। कुछ व्यक्ति को आध्यात्मिक प्रेरणा, जिज्ञासा भी मिली जिसके कारण मत परिवर्तन किया। लोगों को सबसे अधिक प्रेरित करती है वो प्रार्थनाएँ जो उनकी भाषा में होती है, एवं जब कोई ईसाई मत का व्यक्ति किसी बीमारी से ग्रसित हो तो सामूहिक रुप से उनके स्वास्थ्य के लिए यीशु मसीह से प्रार्थनाएँ करते है। जब कुछ लोगों को जब सामाजिक समरसता का भाव मिला तो वह अपने पारम्परिक धर्म में वापिस आ गये। ईसाई मिशनरियों का बहुत सामाजिक प्रभाव पड़ा। हिन्दूओ की पूजा पद्धति, जहां पर पहले मंदिरों में जाकर पूजा अर्चना करते थे अब उनके स्थान पर क्रॉस और बाइबिल को मानने के साथ पारंपरिक देवी देवताओं को घरों से बाहर निकल देते है। उनके रहन सहन, रिति-रिवाज, परंपराओं एवं मूल्यों में परिवर्तन आता है। ईसाई मत उनके जीवन से जुडा होने कारण हर पहलू बदल जाता है।जिसका प्रभाव समाज की एकता पर पड़ा जहां पर लोगों पहले साथ रहते थे अब मत परिवर्तन से अलग हो गये। अपने देवी देवताओं के शैतान कहकर उनकी आलोचना के कारण आपसी वैमनस्य का भाव एवं लड़ाई की परिस्थितियाँ बनती है। इसलिए मत परिवर्तन सामाजिक समस्या के रुप में आज देश और प्रदेश के सामने खड़ा हुआ है।

संदर्भ सूची

[1] Thurston, E. (1909).Castes and tribes of southern India (Vol. 3). Government Press.

[2] Richter, J. (1908). A history of missions in India (Vol. 60). Oliphant.

[3] Moraes, G. M. (1964). A history of christianity in India: from early times to St. Francis Xavier: AD 52-1542.

[4] Richter, J. (1908). A history of missions in India (Vol. 60). Oliphant

[5] Du Jarric, P. (1996). Akbar and the Jesuits: An Account of the Jesuits Missions to the Court of Akbar. Asian Educational Services.

[6] Richter, J. (1908) A history of missions in India (Vol. 60). Oliphant

[7] Bhattacharyya, H. (1956). The cultural heritage of India.

[8] Proceedings of the Church Missionary Society For Africa and the East, 1854-1855, (London, 1855),

[9] Church Missionary Society. (1852). The Church Missionary Intelligencer. Church Missionary Society.

[10] Church Missionary Society. (1891). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East... Church Missionary House.

[11] Church Missionary Society. (1891). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East... Church Missionary House

[12] Church Missionary Society. (1843–1844). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East. London: L. B. Seeley & J. Hatchard.

[13] Church Missionary Society. (1843–1844). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East. London: L. B. Seeley & J. Hatchard.

[14] Gazetteer of the Simla District, 1904,

[15] Gazetteer of the Simla District, 1904,

[16] Church Missionary Society. (1853–1854). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East. London: L. B. Seeley & J. Hatchard.

[17] Church Missionary Society. (1853–1854). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East. London: L. B. Seeley & J. Hatchard.

[18] Panjab District Gazetteers, Vol. VII, Part-A, Kangra District, 1924-1925, (Lahore, 1928), Retrieved from Punjab District Gazetteers volume VII part a Kangra District, 1924-25 with map : Arjun Das Vasudev : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

[19] Church Missionary Society. (1855). Proceedings of the Church Missionary Society for Africa and the East, 1854–1855. London: L. B. Seeley & J. Hatchard

[20] Church Missionary Society. (1909, August 2). Church Missionary Society Gazette. London

[21] Langton, E. (1956). History of the Moravian Church: The story of the first international Protestant church. London: George Allen & Unwin.

[22] Gazetteer of the Kangra District, Part II to IV, Kullu, Lahaul and Spiti. (1899). Lahore.

[23] Chetwode, P. (1972). Kullu: The End of the Habitable World (Bombay: Allied).

[24] Chetwode, P. (1972). Kullu: The End of the Habitable World (Bombay: Allied).

[25] Punjab Government. (1904). Chamba State. Punjab: Government of Punjab. Retrieved from Chamba State : Punjab Govt : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

[26] Panjab Government. (1907). Sirmur State Gazetteer Pt. A. Digital Library of India. Retrieved from Sirmur State Gazetteer Pt.a 1904 : Panjab Government : Free Download, Borrow, and Streaming : Internet Archive

[27] Oddie, G. A. (1979). Social protest in India: British Protestant missionaries and social reforms; 1850-1900.

[28] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (5 जून 2025) , ज़िला चम्बा हि प्र

[29] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (11 जून 2025), ज़िला चम्बा हि प्र

[30] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (21 जून 2025)ज़िला , शिमला हि प्र

[31] Bauman, C. M. (2013). Hindu-Christian conflict in India: Globalization, conversion, and the coterminal castes and tribes. The Journal of Asian Studies, 72(3), 633-653.

[32] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (24 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र

[33] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (22 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र

[34] Frykenberg, R. E. (2008). Christianity in India: from beginnings to the present. Oxford University Press.

[35] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (10 जुलाई 2025)ज़िला , काँगड़ा हि प्र

[36] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (9 जुलाई 2025 ,(ज़िला काँगड़ा हि प्र

[37] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (9 जुलाई 2025 ,(ज़िला काँगड़ा हि प्र

[38] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (25 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र

[39] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (21 जून 2025) , ज़िला शिमला हि प्र

[40] Asirvatham, E. (1955). Christianity in the Indian crucible. Calcutta

[41] Bauman, C. M. (2013). Hindu-Christian conflict in India: Globalization, conversion, and the coterminal castes and tribes. The Journal of Asian Studies, 72(3), 633-653.

[42] Durkheim, E. (1897). Le Suicide: Étude de Sociologie Paris: Félix Alcan.

[43] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (29 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र

[44] Bauman, C. M. (2013). Hindu-Christian conflict in India: Globalization, conversion, and the coterminal castes and tribes. The Journal of Asian Studies, 72(3), 633-653.

[45] Oddie, G. A. (1979). Social protest in India: British Protestant missionaries and social reforms; 1850-1900.

[46] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (29 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र

[47] Neill, S. (2002). A history of Christianity in India: 1707-1858 (Vol. 2). Cambridge University Press.

[48] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (6 जुलाई 2025(, ज़िला काँगड़ा हि प्र

[49] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (28 जून 2025) , ज़िला शिमला हि प्र

[50] Bauman, C. M. (2013). Hindu-Christian conflict in India: Globalization, conversion, and the coterminal castes and tribes. The Journal of Asian Studies, 72(3), 633-653.

[51] Frykenberg, R. E. (2008). Christianity in India: from beginnings to the present. Oxford University Press.

[52] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (20 जुलाई 2025), ज़िला काँगड़ा हि प्र

[53] अमर उजाला ब्यूरो 15 मई 2017

[54] Oddie, G. A. (1997). Social Protest in India: British Protestant Missionaries and Social Reforms, 1850–1900.Manohar Publishers.

[55] Frykenberg, R. E. (2008). Christianity in India: from beginnings to the present. Oxford University Press.

[56] Durkheim, E. (1897). Le Suicide: Étude de Sociologie Paris: Félix Alcan.

[57] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (6 जुलाई 2025(, ज़िला काँगड़ा हि प्र

[58] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (24 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र

[59] व्यक्तिगत साक्षात्कार, नाम गुप्त रखा गया, (24 जून 2025), ज़िला शिमला हि प्र